विचार बिन्दु

कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर भी टर्राने लगता है। –प्रसंग रत्नावली

समर्थ को दोष क्यों नहीं?

परीक्षाएं पहले भी होती थीं, अब भी होती हैं, आगे भी होती रहेंगी। अपने लगभग साढ़े तीन दशकों के सेवा काल में और उसके बाद भी मैंने न जाने कितनी भूमिकाओं में परीक्षाओं के संचालन में सहभागिता की है। हर परीक्षा उससे जुड़े व्यक्ति की भी परीक्षा होती है। अब संतोष होता है कि सब कुछ ठीक-ठाक रहा, कोई प्रवाद नहीं हुआ। लेकिन समय के बदलने के साथ-साथ परीक्षा करवाना जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। अब तो समय ऐसा आ गया है कि शायद ही कोई परीक्षा हो जो बिना किसी विवाद के संपन्न हो सकी हो। ऐसे में हाल में राजस्थान में रीट जैसी बड़ी परीक्षा का निर्विघ्न संपन्न हो जाना बहुत राहत की बात है।

परीक्षा भले ही निर्विघ्न संपन्न हो गई। कम से कम मेरे मन में बहुत सारी बातें छोड़ गई है। आज एक बात की ही चर्चा करूंगा। जैसे-जैसे परीक्षा कार्य संपन्न करवाना कठिन होता जा रहा है, उसे आयोजित करवाने वालों को दिए जाने वाले निर्देश भी बढ़ते जा रहे हैं। कभी इण्टरनेट बंद किया जाता है (जो पहले कभी नहीं किया जाता था। पहले तो होता भी नहीं था), तो कभी परीक्षार्थियों के लिए क्या पहनें और क्या न पहने की विस्तृत दिशा-निर्देशिका ज़ारी की जाती है। प्रश्न पत्र लीक हो जाने की आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए इस आशय के निर्देश भी ज़ारी किए जाते हैं कि एक निश्चित समय के बाद परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र में प्रवेश न दिया जाए। आज मैं ऐसे ही कुछ निर्देशों के बारे में चर्चा करना चाहता हूं। जिस दिन परीक्षा आयोजित होती है उस के अगले दिन के अखबार इस तरह की खबरों से भरे रहते हैं कि कोई परीक्षार्थी केवल पांच मिनिट देर से आया तो भी उसे परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया या किसी महिला परीक्षार्थी से उसका मंगलसूत्र तक उतरवा दिया गया। ऐसी ख़बरें हम हर परीक्षा के बाद पढ़ते हैं।

इस बार भी ये सब पढ़ने को मिलीं। ऐसी ख़बरों में सहानुभूति का एक अतिरिक्त तड़का भी मार दिया जाता है। मसलन यह कि दो दिन पहले ही मां बनी एक युवती को सिर्फ़ दस मिनिट देर से आने पर परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया। समझा जा सकता है कि मां बनने वाली बात उसके प्रति अतिरिक्त सहानुभूति पैदा करने के लिए लिखी गई है। उसके प्रति सहानुभूति और परीक्षा करवाने वालों की निर्ममता के प्रति नाराज़गी पैदा करने के लिए। माना जा सकता है कि अखबार का संवाददाता बेहद संवेदनशील है और उससे किसी का दुख देखा नहीं जाता है। लेकिन क्या बात केवल इतनी-सी है? क्या इस बात का कोई रिश्ता हमारे सोच की बनावट से भी जुड़ता है?

जैसा मैंने पहले कहा, आजकल परीक्षा आयोजित करना बहुत जटिल होता जा रहा है। परीक्षार्थी पहले से अधिक चालाक हो गया है, उसके साथ इस परीक्षा रूपी किले में सेंध लगाने के लिए अन्य अनेक ताकतें भी जुड़ गई हैं। इसलिए जो परीक्षा आयोजित करते-करवाते हैं उन्हें भी पहले से ज़्यादा सावधानी बरतनी पड़ती है। कुछ ख़ास तरह की वेशभूषा का आग्रह, समय की पाबंदी का कठोरता से निर्वाह ऐसी ही सावधानियां हैं। देखने की बात यह है कि इस तरह की सावधानियां और पाबंदियां जीवन के अन्य अनेक क्षेत्रों में भी बरती जाती हैं। क्या हम उनको लेकर भी ऐसी ही मानवीय करुणा से भरी ख़बरें लिखते और टिप्पणियां करते हैं? या कुछ के प्रति हम अधिक सहानुभूतिशील होते हैं और कुछ के प्रति हम ज़रूरत से ज़्यादा छिद्रान्वेषी हो जाते हैं? किनकी कड़ाई को हम सहज भाव से स्वीकार करते हैं और किनकी कड़ाई हमें दुखी करती है?

एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पांच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।

जीवन के बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं जहां कड़े फैसले होते हैं और तदनुरूप कार्यवाही भी की जाती है। पुलिस चोर को पकड़ती है, उसे दण्डित करती है। न्यायपालिका भी इसी तरह के काम करती है। कभी किसी को सपरिश्रम कारावास तो यदा-कदा किसी को मृत्यु दण्ड भी। इनके अलावा भी अनेक इलाके हैं जहां कठोर फैसले होते हैं। क्या तब भी हमारे पत्रकार मित्र इसी तरह कातर होते हैं? अगर पुलिस किसी को गिरफ्तार करती है तो कभी यह क्यों नहीं लिखा जाता कि इसने बस, एक छोटी-सी ग़लती ही तो की थी! और यही क्यों? अगर मैं जयपुर से सड़क मार्ग से दिल्ली जाते हुए ट्रैफिक जाम में फंस जाऊं और दिल्ली से मुझे विदेश ले जाने वाली फ्लाइट छूट जाए तो मुझे होने वाली असुविधा और आर्थिक क्षति पर एक बूंद भी आंसू क्यों नहीं टपकाया जाता? किसी एयरलाइंस पर उस समय कोई सवाल क्यों नहीं उठाया जाता जब वह एक निश्चित समय पर बोर्डिंग गेट बंद कर देती है? इन सबकी व्यवस्थाओं को हम बहुत सहज भाव से स्वीकार करते हैं, लेकिन जब शिक्षा की दुनिया में किसी व्यवस्था का पालन (वह भी मज़बूरी में) किया जाता है तो हमारी सहानुभूति के परनाले बहने लगते हैं!

मेरा ऐसा मानना है कि पूरे समाज के लिए शिक्षा और उससे जुड़े लोग सॉफ्ट टार्गेट हैं। जब भी किसी का जी चाहता है, इन्हें गरिया दिया जाता है। इसलिए कि ये ताकतवर नहीं हैं। बाबा तुलसीदास याद आते हैं: ***समरथ को नहिं दोष गुसाईं।*** पुलिस, न्यायपालिका, रेल, हवाई जहाज - ये सब समर्थ हैं। इसलिए हम इन पर कभी उंगली नहीं उठाएंगे। शिक्षक कमज़ोर है, उसे हर समय कटघरे में खड़ा करते रहेंगे।

यहां शिक्षक को अधिक व्यापक संदर्भ में लें - जो भी शिक्षा से जुड़ा काम कर रहा है, वह शिक्षक है।

परीक्षा से जुड़ा काम भी शिक्षा से जुड़ा काम है। वैसे, कमज़ोर और ताकतवर के बीच यह भेद यहीं नहीं, हमारे चारों तरफ नज़र आता है। आप चौराहे पर ट्रैफिक नियंत्रित करने वाले अल्प वेतन भोगी सिपाही के तथाकथित भ्रष्ट आचरण पर तो खूब टिप्पणी करेंगे लेकिन उसको ऐसा करने के लिए विवश करने वाली व्यवस्था पर चुप रहेंगे। तथाकथित का प्रयोग मैंने जान बूझकर और सोच समझकर किया है। इस बात पर ज़रूर विचार करें कि ज़्यादातर मामलों में वह आपसे पैसे नहीं मांगता है, आप खुद आगे बढ़कर उसे पैसे देते हैं। पांच सौ रुपये का चालान कटवाने की बजाय सौ रुपये उसके हाथ में देकर आप खुद ईमानदार बन जाते हैं और उसे चोर घोषित कर देते हैं। अपने चारों तरफ हमें भ्रष्टाचार नहीं दिखाई देता है। कभी हम इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं कि लोग जो अनाप शनाप खर्चा कर रहे हैं वह आ कहां से रहा है। बीस तीस हज़ार की तनख़्वाह वाला बोलेरो में घूमता है लेकिन वह हमारी आंखों में नहीं खटकता है। ये सब हमारे लिए सदा सम्मानित बने रहते हैं। लेकिन एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पांच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षा की दुनिया में सब साफ सुथरा है। बेशक वहां भी बहुत कुछ है जो धूसर है, और उस पर बात होनी भी चाहिए। लेकिन इस प्रसंग में तो यह भी देखा जाना चाहिए को जो कड़ाई बरती जा रही है वह समय की ज़रूरत है। एक प्रसंग का ज़िक्र करके इस बात को विराम दूंगा। स्वयं प्रकाश हिंदी के बड़े कथाकार हैं। कुछ समय पहले उनकी एक संस्मरणात्मक पुस्तक आई थी - ***धूप में नंगे पांव।*** इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन से जुड़ा एक प्रसंग लिखा है। वे एम.ए. हिंदी की परीक्षा दे रहे थे। जहां वे रहते थे, परीक्षा केंद्र वहां से चालीस किलोमीटर दूर था। जिस दिन उनका आखिरी पेपर था, संयोग कुछ ऐसा बना कि वे ठीक समय पर परीक्षा केंद्र नहीं पहुंच सके। और वे सिर्फ़ पांच मिनिट लेट नहीं हुए थे। इस किताब के विवरण के अनुसार वे दो घण्टा देर से पहुंचे। (वैसे वे दो घण्टा नहीं कोई आधा घण्टा देर से पहुंचे थे। यह जानकारी इसलिए कि मैं खुद इस प्रसंग का एक किरदार था। किताब में ज़िक्र है। लेकिन कथाकार अतिशयोक्ति करने का हक़ रखता है!) और प्राचार्य ने उन्हें परीक्षा देने दी। (अगर आपके पास यह किताब हो तो देखें पृ 128-129)। लेकिन, जैसा मैंने कहा, वह समय अलग था। आज जैसा जटिल नहीं था। ऐसा नहीं है कि आज का पूरा शिक्षा तन्त्र अमानवीय हो गया है। मज़बूरी यह है कि आज अगर कोई परीक्षा कर्मचारी किसी को ज़रा भी छूट दे दे तो न जाने कितने प्रवाद उठ खड़े हों। और यह भी पता नहीं कि जिसे छूट दी जाए वह उसका सुपात्र है या कुपात्र! क्या पता कुछ देर से आने वाला बाहर से लीक हुए पर्चे के उत्तर लेकर भीतर आ रहा हो! क्या पता किसी महिला ने अपने किसी आभूषण में नकल करने की कोई डिवाइस छिपा रखी हो। क्या पता....क्या पता!

ऐसे में ज़िम्मेदार पत्रकारिता से, और समाज से भी, यह उम्मीद तो बनती ही है कि वह कमज़ोर के प्रति सहानुभूति रखते हुए उनके प्रति भी निर्मम न हो जो दिये हुए निर्देशों का पालन करके अपने कर्तव्य का समुचित निर्वहन कर रहे हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद् और साहित्यकार)

अदालतों में मुकदमों के अंबार को कम करने पर हो मंथन

लाख प्रयासों के बावजूद देश की अदालतों में मुकदमों का अंबार कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश की अदालतों में सात करोड़ से अधिक मुकदमे लंबित हैं। इनमें से करीब 87 फीसदी मुकदमे देश की निचली अदालतों में लंबित हैं तो करीब 12 फीसदी मुकदमे राज्यों के उच्च न्यायालयों में लंबित चल रहे हैं। देश की सर्वोच्च अदालत में एक प्रतिशत मुकदमे लंबित हैं। पिछले दिनों जयपुर में आयोजित एक समारोह के दौरान न्यायालयीय प्रक्रिया और सर्वोच्च न्यायालय में पैरवी करने वाले वकीलों की फीस को लेकार अच्छी खासी चर्चा हुई जो मीडिया की सुर्खियां भी बनी। वहीं अगस्त में कार्य भार संभालने वाले नए मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति यूयू ललित द्वारा अदालत में सुबह साढ़े नौ बजे सुनवाई आरंभ करने की पहल पर भी वाद-विवाद का दौर जारी है। उधर सरकार ने मानसून सत्र में कुछ बदलावों के साथ मध्यस्थता विधेयक लाने का संकेत दिया है तो दूसरी ओर न्यायाधीशों की भर्ती में एकरुपता लाने के केन्द्र के प्रयास लगभग विफल हो गए हैं।

हांलाकि इसमें कोई दो राय नहीं कि न्यायालयों में मुकदमों का अंबार लगा हुआ है तो दूसरी और सभी पक्ष इसे लेकर चिंतित भी हैं। सवाल यह है कि मुकदमों के इस अंबार को कम करने के लिए कोई ऐसी रणनीति बनानी होगी जिससे अदालतों का भार भी कम हो न्यायिक प्रक्रिया लंबी भी ना चले, लोगों को समय पर न्याय भी मिले। पिछले पांच साल में ही देश में लंबित मुकदमों की संख्या चार करोड़ से बढ़कर आज सात करोड़ हो चुकी है। हांलाकि लोक अदालत के माध्यम से मुकदमों में कमी लाने की सार्थक पहल अवश्य की गई है पर लोक अदालतों में लाखों प्रकरणों के निबटने के बावजूद हालात में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। दरअसल लाखों की संख्या में इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें निपटाने के लिए कोई सर्वमान्य समाधान खोजा जा सकता है। मुकदमों की प्रकृति के अनुसार उन्हें विभाजित किया जाए और फिर समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर उन्हें निपटाने की कार्य योजना बने तो समाधान कुछ हद तक संभव है। कुछ इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें आसानी से निपटाने की कोई योजना बन जाए तो मुकदमों की संख्या में कमी हो सकती है। इनमें खासतौर से यातायात नियमों को तोड़ने वाले मुकदमों की ऑनलाइन निपटान की कोई व्यवस्था हो जाए तो अधिक कारगर हो सकती है। इसी तरह से चैक बाउंस होने के लाखों की संख्या में मुकदमे हैं जिन्हें एक या दो सुनवाई में ही निस्तारित किया जा सकता है। इसी तरह से मामूली कहासुनी के मुकदमे जिसमें शांति भंग के प्रकरण शामिल हैं उन्हें भी तारीख दर तारीख के स्थान पर एक ही तारीख में निपटा दिया जाए तो हल संभव है। इसी तरह से राजनीतिक प्रदर्शनों को लेकर दर्ज होने वाले

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

■ कुल लंबित सात करोड़ मुकदमों का करीब 87 फीसदी देश की निचली अदालतों में लंबित हैं

मुकदमों के निस्तारण की भी कोई कार्ययोजना बन जाए तो उचित हो। इससे कम ग्रेविटी के मुकदमों का सहज निस्तारण संभव होगा तो न्यायालयों का समय भी बचेगा।

देश में सबसे ज्यादा मुकदमे रेवेन्यू से जुड़े हुए हैं। गांवों में जमीन के बंटवारे या सीमा निर्धारण को लेकर देश की निचली अदालतों में अंबार लगा हुआ है। इस तरह के मुकदमों के निपटारे में ग्राम पंचायत की कहीं कोई भूमिका तय हो तो शायद कोई स्थाई समाधान संभव हो सकता है। पंच परमेश्वर की अवधारणा कहीं इस तरह के मुकदमों के निपटारे में अधिक सहायक हो सकती है। स्थानीय स्तर पर समझाइस से इस तरह के मुकदमों पर शीघ्र निर्णय की एक संभावना बनती है। हो यह रहा है कि रेवेन्यू के मुकदमें अपील दर अपील पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं और मामूली सा सीमा विवाद लंबी कानूनी प्रक्रिया में उलझ कर रह जाता है। मीडिया ट्रॉयल पर भी अंकुश की आवश्यकता है क्योंकि इससे कुछ हद तक निर्णय प्रभावित होने की संभावना बनती है।

हांलाकि इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारे देश की अदालतों में ब्रिटेन आदि की अदालतों से कई गुणा अधिक मुकदमों की सुनवाई एक दिन में होती है। केन्द्रीय कानून मंत्री किरेन रिजूजू की माने तो इंग्लैण्ड में एक न्यायाधीश एक दिन में तीन से चार मामलों में निर्णय देते हैं जबकि हमारे देश में प्रत्येक न्यायाधीश औसतन प्रतिदिन 40 से 50 मामलों में सुनवाई करते हैं। यह इस ओर भी इंगित करता है कि हमारे देश में न्यायाधीशों के पास कार्यभार अधिक है। अधिक काम करने के बावजूद मुकदमों की संख्या कम होने का नाम ही नहीं लेती। पिछले कुछ समय से जिस तरह से पीएलआई को लेकर माननीय न्यायमूर्तियों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है और जुर्माना भी लगाया जा रहा है इसके भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे है। इसी तरह से कोर्ट में केस दायर होने पर गवाह या याचिकाकर्ता के होस्टाइल होने को भी जिस तरह से अदालतों द्वारा गंभीरता से लिया जाने लगा है उसके भी परिणाम आने वाले समय में और ज्यादा सकारात्मक होंगे। न्यायालयों की मध्यस्थता के लिए भेजे जाने वाले मामलों में वादी-प्रतिवादी द्वारा गंभीरता नहीं दिखाने से भी हालात अधिक सुधरे नहीं है। केन्द्र सरकार अब मध्यस्थता कानून में इसी मानसून सत्र में आवश्यक संसोधित प्रावधानों के साथ पारित कराने के लिए गंभीर लगती है। देखा जाए तो अदालतों की सामान्य प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास है। चारों तरफ से निराश और हताश व्यक्ति न्याय के लिए न्याय का दरवाजा खटखटाता है। ऐसे में गैरसरकारी संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे लोगों में अवेयरनेस लाएं और अदालत से बाहर निपटने वाले मामलों को बाहर ही निपटा लें। इसके लिए पूर्व न्यायाधीशों, पूर्व प्रशासनिक अधिकारियों, वरिष्ठ वकीलों व गैरसरकारी संगठनों या सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम बनाई जा सकती है जो इस तरह के मामलों को समझाइश से सुलझा सके। जिससे न्यायालयों का समय भी बचे और वादी प्रतिवादी का धन और समय बचने के साथ ही सौहार्द भी बना रह सके।

– डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

शहर से लेकर ग्रामीणांचल तक राखी की दुकानें सजी

पावटा कस्बे के बाजार में राखी खरीदती महिलाएं।

पावटा, (निसं)। रक्षाबंधन पर्व के लिए राखी की दुकानें सज गई हैं। त्योहार के लिए सजे बाजार में आई राखियां आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

रक्षाबंधन पर्व पर बाहर रहने वाले भाइयों को अभी से राखियां भेजना शुरू कर दिया है। राखी के पर्व के लिये कपडे, मिठाई और ड्राईफूड से लेकर गिफ्ट आइटम बेचने वालों की दुकानों पर भी

■ राखी के दामों में करीब 10 से 15 फीसदी का इजाफा

रौनक दिखाई दे रही है। उच्च वर्गीय लोगों के लिये बाजार में सोने और चांदी की सुदंर कलात्मक राखियां भी उपलब्ध हैं। पर्व को लेकर नगर से लेकर ग्रामीणांचल तक राखी की दुकानें सज गई हैं। राखी व्यवसायियों के अनुसार इस बार बाजार में चीन निर्मित लोराए, सोफिया और रिया के अलावा ओमश्री अशोक चक्र, सहेली, जलाशीष और संगम मार्का राखियों की खासी बिक्री हो रही है। दुकानों पर लोगों की भीड लगनी शुरू हो गई है। चाइनीज और मुंबई निर्मित स्टोन की राखियों का बाजार में दबदबा है।

सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग कर दागा गोल

सादुलपुर, (निसं)। राष्ट्रमंडल खेलों में रविवार को भारतीय महिला हॉकी टीम ने बेहद रोमांचक मैच में गत चैंपियन न्यूजीलैंड को पेनल्टी शूटआउट में हराकर पहली बार इन खेलों में ब्रांज मैडल जीत लिया है। वहीं बेहद रोमांचक मैच के निर्धारित चार क्वार्टर पूर्ण होने तक दोनों टीमें एक-एक गोल की बराबरी पर थी। ऐसे में मैच का निर्णय पेनल्टी शूटआउट से होना था, जहाँ न्यूजीलैंड की टीम 1-० की बढ़त बना

■ पेनल्टी शॉट में सोनिका ने न्यूजीलैंड की गोलकीपर को छकाया

चुकी थी और भारतीय टीम अपना पहला अवसर गंवा चुकी थी। ऐसे में चूरू जिले के अंतिम छोर पर स्थित सादुलपुर विधानसभा क्षेत्र के गांव गालड की बिटिया सोनिका टांडी को पेनल्टी शॉट का अवसर मिला। जिसमें सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग करते हुए विपक्षी गोलकीपर को छकाते हुई गोल दागकर धमाल कर दिया। इसके बाद भारतीय गोलकीपर सविता ने अपने

चूरू जिले के गांव गालड की हॉकी खिलाडी सोनिका टांडी तिरंगे के साथ।

साहसिक प्रयासों से विपक्षी टीम को उभरने नहीं दिया। भारत ने पेनल्टी शूटआउट में मुकाबला 2-1 से जीतते हुई राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार महिला हॉकी में ब्रॉन्ज मैडल पर कब्जा कर लिया। मैच के अंतिम पडाव में सोनिका के गोल करते ही उसके पैतृक गांव गालड व आसपास के गाँवों में खुशी की लहर दौड गई। वहीं लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर जश्न मनाया। हॉकी प्रेमी वेदपाल धानोठी ने बताया कि सोनिका टांडी बेहद प्रतिभाशाली खिलाडी है, जोकि पूर्व में भारत को एशिया कप जीताकर चूरू जिले व राजस्थान प्रदेश का नाम रोशन कर चुकी हैं।

पीबीएम के इमरजेंसी में डिहाइड्रेशन का इंजेक्शन तक नहीं

बीकानेर,(कासं)। पलाना के हड़मानाराम को उल्टी-दस्त की शिकायत के बाद उनके परिजन पीबीएम के मेडिसिन इमरजेंसी लेकर पहुंचे। डॉक्टर ने मरीज के शरीर में पानी की कमी होना बताकर पर्ची पर डेक्सट्रोज इंजेक्शन लिखा। जब मरीज का रिश्तेदार गणपतराम इंजेक्शन लेने हॉस्पिटल के दवा वितरण केंद्र (डीडीसी) पहुंचा तो फार्मासिस्ट ने पर्ची पर नॉट अवेलेबल (एनए) लिख दिया। गणपतराम उदाहरण मात्र है, जिसे इमरजेंसी इंजेक्शन के लिए दर-दर भटकना पड़ा। हॉस्पिटल में रोजाना आने वाले सैकड़ों मरीज गणपतराम की तरह आधी-अधूरी दवाइयां लेकर अपने घर या मरीज के पास पहुंच रहे हैं।

शहर की डिस्पेंसरियों के हाल इससे भी बदतर है। यहां जुकाम, दर्द निवारक, एंटीबायोटिक सरीखी जरूरी दवाइयां भी नहीं मिल रही। शुक्रवार को मुपत दवा योजना की पड़ताल की तो चौकाने वाली तस्वीर सामने आई। चिंता की बात यह है कि संभाग के सबसे बड़े पीबीएम हॉस्पिटल में एंटीबायोटिक, दर्द निवारक इंजेक्शन, टेबलेट यहां तक की ब्लड़ प्रेशर और शुगर की दवाइयां भी नहीं मिल रही हैं। जबकि डीडीसी पर दवाइयों की उपलब्धता के लिए प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र से दवाइयों की खरीद के हेल्थ डिपार्टमेंट कई बार आदेश जारी कर चुका है। हैरानी की बात है कि पीबीएम हॉस्पिटल प्रशासन प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र की दवाइयों के स्थान

■ डिस्पेंसरियों में पर्ची पर एनए लिख रहे

पर निजी फार्मा कंपनियों की दवाइयां लेने में दिलचस्पी दिखा रहा है।

राज्य सरकार की ओर से करीब 1700 तरह की निशुल्क दवाइयां उपलब्ध करवाई जाती है। हालांकि बीकानेर में 1000 दवाइयों की जरूरत ही आमतौर पर पड़ती है। लेकिन इन दवाइयों में से मरीजों को करीब 30 फीसदी दवाइयां मिल नहीं रही। ऐसे में उन्हें बाहर से महंगी दवाइयां खरीदनी पड़ रही हैं। पीबीएम हॉस्पिटल और शहर की डिस्पेंसरियों में एमोक्सीलिन 625 टेबलेट, सैफिक्स 200, सीपलोक्सिन 250/500,एंटीकोल्ड,मेटफोर्मिन,डिक्लोफेनाक, सीट्राजिन, एजेडआई-250, सीपीएम, पोविडोन, एंटी कोल्ड सीरप, मेरोपेनम इंजेक्शन, ऑफलोक्स आरिनडाजोल टेबलेट, लिनेजोलिड, लैबटेलोल इंजेक्शन, पोविडोन सरीखी जरूरी दवाइयां नहीं मिल रही हैं। मरीजों की यह परेशानी रात को और ज्यादा हो जाती है, जब बच्चा और जनाना हॉस्पिटल में महिलाओं को दवाइयों के लिए हॉस्पिटल परिसर से बाहर जाना पड़ता है। पीबीएम हॉस्पिटल में रोजाना करीब 5 हजार मरीजों का आना-जाना होता है। ऐसे में दवाइयां नहीं मिलने से मरीजों को होने वाली परेशानी को समझा जा सकता है। स संबंध में हॉस्पिटल के सुपरिटेंडेंट डॉ. प्रमोद कुमार सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र को दवाइयों के लिए पहले चरण में करीब 20 लाख रुपए का ऑर्डर दिया था, लेकिन उसके जयपुर स्थित अधिकृत विक्रेता ने दवाइयों की शॉर्टेज बता दी। समय-समय पर दवाइयों की लोकल खरीद की जाती है, ताकि मरीजों को डीडीसी के अलावा कहीं भटकना नहीं पड़े। जो दवाइयां डीडीसी पर नहीं मिल रही है, उनकी लिस्ट मंगवाकर जल्द ही उनकी लोकल या सरकारी केंद्रों से खरीद कर मरीजों को राहत पहुंचाई जाएगी। सरकार 15 लाख रुपए बिना स्वीकृति दवा खरीद के लिए उपलब्ध करवाती है, जिसकी बिल करने के साथ ही दोबारा राशि मिल जाती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 8 अगस्त, 2022

सावन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 2:37 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 6:55 तक, वणिज करण दिन 10:26 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:37 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग दिन 2:37 तक है। कुमार योग दिन 2:37 से रात्रि 9:01 तक है। भद्रा दिन 10:26 से रात्रि 9:01 तक है। आज पवित्रा एकादशी, आज चतुर्थ सावन वन सोमवार व्रत वैधृति पूण्य है और कतल की रात (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:37 तक, शुभ 9:15 से 10:54 तक, चर 2:11 से 3:49 तक, लाभ-अमृत 3:49 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 7:07

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

मिथुन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर

आर्थिक व्यावसायिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ-मांगलिक कार्यों भाग लेने का अवसर मिलेगा।